उसको विपक्षगामी नहीं है, जैसे - शब्द
शब्द होने के कारण अनित्य है, यहाँ
हेतु के सपक्ष में अव्याप्ति है।

(ii) अनुपसंहारी — यहाँ सपक्ष और
विपक्ष दोनों का अभाव
होने से हेतु का सपक्ष सत्व और विपक्ष
सत्व सिद्ध नहीं होता है। जैसे - सब
प्रमेय होने के कारण अनित्य है, यहाँ
सबके प्रमेय होने के कारण अन्वय
और व्यतिरेक का दृष्टांत नहीं है।
यहाँ हेतु, अन्वय और व्यतिरेक दृष्टांत
रहित है।

Date 11/06/18

(iii) विरुद्ध — इस प्रकार के हेत्वाभास
को विरुद्ध कहते हैं। विरुद्ध
हेतु उस अनुमान में पाया जाता है जिसमें
वह साध्य के अस्तित्व को नहीं, प्रत्युत
उसके अभाव को ही पक्ष में सिद्ध
करता है। क्योंकि इसका उदाहरण
इस प्रकार देते हैं "शब्द नित्य है,
क्योंकि इसकी उत्पत्ति है।" हेतु उत्पत्ति
शब्द के नित्यत्व को नहीं, वरन इसके
अनित्यत्व को ही सिद्ध करता है, क्योंकि
जो उत्पन्न होता है उसका नाश भी
होता है।

निगम - निगमन

iii) सत्प्रतिपक्ष — यह दोष तब होता है जब एक अनुमान का कोई दूसरा प्रतिपक्षी अनुमान संभव हो, जैसे —

a) शब्द नित्य है
b) क्योंकि यह आकाश की भाँति अदृश्य है
c) शब्द अनित्य है
क्योंकि यह घट की भाँति एक कार्य है,

द्वितीय अनुमान प्रथम अनुमान के निगमन को खंडित कर देता है प्रथम अनुमान से हेतु अदृश्य द्वारा शब्द की नित्यता सिद्ध की गई है किन्तु द्वितीय अनुमान में हेतु कार्य के द्वारा उसकी अनित्यता सिद्ध की गई है, दूसरे अनुमान के द्वारा पहले अनुमान के हेतु खंडित हो

15 Sunday

जाता है, अतः इस अनुमान में सत्प्रतिपक्ष का दोष है,

iv) असिद्ध — जब हेतु की सत्ता की विद्यमानता न हो तो वह हेतु असिद्ध है, यहाँ हेतु के पक्षसत्त्व या पक्षधर्मता गुण का उल्लंघन है, यह तीन प्रकार का होता है,

a) आश्रयासिद्ध — पक्ष हेतु का आश्रय होता है जब पक्ष